संगीत में मानसिक चेतना

सुदेश कुमारी
रीडर/प्रभारी संगीत विभाग
गोकुलदास हिन्दू महिला महाविद्यालय
मुरादाबाद

सारांश

संगीत मानव की चेतन व अवचेतन दोनों अवस्थाओं को प्रभावित करता है। जहाँ मानव की अन्तः इन्द्रियाँ शुभ अशुभ की पहचान कराने की कोशिश करती है, वहीं उसका बाह्य शरीर, सर्दी, गर्मी, वर्षा ऋतु की अनुभूति कराता है मानव शरीर के दोनों भाग मिलकर ही मानव को पूर्ण बनाते है। मानव में अन्तर्चेतना के कारण ही समस्त प्राणी जगत में मानव श्रेष्ठ माना गया है। इसी कारण मानव बुद्धिमान सजग चेतना से ओत–प्रोत रहता है। मानव की चेतना ही इसे समाज के अनुकूल व अनुशासन सिखाती है। मानव की इच्छा तृप्ति दो प्रकार की होती है एक सांसारिक व दूसरी आध्यात्मिक मानव दोनों की पूर्ति हेतु मार्ग भी अलग–अलग चुनता है। जिसमें से उसकी अन्तःचेतना उसके ऊपर प्रबल होती है। यही अन्तःचेतना मानव के भावो को अभिव्यक्त करने में सक्षम होती है और उसे पूर्ण शान्ति प्रदान करती है। संगीत अन्तःचेतना का ही प्रतिफल है जो आत्मा को तुष्ट करता है। और मानव को असीम सुखानन्द प्रदान करता है।

मुख्य शब्द : निसन्देह, उद्वेलित, अन्तर्द्वन्द, ब्रह्मजगत, उद्वेलित, अभिव्यक्ति, परिमार्जित

प्रस्तावना

संगीत का जन्म मानव की अन्तःचेतना से विकसित होकर समाज में नित्य नवीन सोपान पार कर हुआ है। निसन्देह मानव की अंतःशक्ति संगीत के जन्म में अत्यन्त सहायक सिद्ध हुई है संगीत मानवीय चेतना के अन्तर्द्वन्द का ही परिणाम है, जिसने विकसित होकर एक परिमार्जित रूप कला के रूप में ग्रहण किया। जिस प्रकार मस्तिष्क से संचरित तरंगे, मन को उद्वेलित करती है ओर मानव को त्वरित क्रिया करने को प्रेरित करती है, ठीक उसी प्रकार संगीत की ध्वनि भी अन्तःनादं कर ब्रह्मजगत को उद्वेलित कर कार्य करने को प्रेरित करती है। संगीत मानव की शारीरिक व मानसिक दोनों अवस्थाओं व स्थिति को पुष्ठ करता है। जिससे प्रभावित होकर मानव मस्तिष्क अच्छे बुरे, रसात्मक भावात्मक रूप के परिपेक्ष्य में व्यवहार करने लगता है और रस एवं सौन्दर्य को आत्मसात करता है। किसी भी कला में रूप की अभिव्यक्ति को नेत्र और कर्ण के द्वारा ग्रहण किया जाता है, और इस ग्रहण करने की प्रक्रिया से आत्मा को यदि आनन्द की प्रप्ति हो, अथवा सुख प्राप्त हो या मन भाव विभोर हो उठे तो उसे कला का सृजन कह सकते हैं। कला एक आत्मानूभूति है। जिसमें मन, मस्तिष्क को आनन्द की अनुभूति होती है और रचनात्मक शक्ति को दिशा मिलती है। जीवन की आवश्यकताओं के साथ – साथ मानव की कुछ आत्मिक और ऐन्द्रिय भूख भी रहती है जिसकी तृप्ति किसी सृजन के माध्यम से होती है और यही सृजन 'कला' है। जिसका मूल, रस और सौन्दर्य है। जिस प्रकार मानव ने सर्वप्रथम प्रकृति में मन मस्तिष्क से खिले पुष्पों, उनके ऊपर भँवरों की गुन्जार, झरनों का अंकृत प्रवाह, वर्षा की टिपटिप, नदियों की कलकल स्वर लहरी को सुना तो रस की अपूर्व अनुभूति हुई, तो वह सृजन करने के लिये लालायित होकर कला के रूप में परिमार्जित हुई। जहाँ मानव का मन कोमल भावनाओं को धारण करता है वहीं मानव का मस्तिष्क उसे अच्छे बुरे की पहचान देता है यही भेद संगीत में उसके लिये वरदान साबित हुआ। संगीत के अच्छे बुरे, स्पष्ट, अस्पष्ट, स्वर, अस्वर इत्यादि को पहचान कराने में सहायक सिद्ध हुआ है। मन से ग्रहण किया हुआ संगीत मस्तिष्क को प्रभावित करता या नहीं, ये संगीत की शुद्धता व अशुद्धता पर निर्भर करता है संगीत चूंकि मानव की संवेदना से जुड़ा माना गया है, तो संगीत संवेगों से जाना जाता हैं। अच्छे संगीत से जहां मानव आनन्द से भर जाता है, उसी प्रकार बुरे संगीत से मानव इन्द्रिय कष्ट भी सहती है। अतः संगीत मानसिक चेतना के लिये अत्यन्त आवश्यक है, जिससे मानव सजग, व प्रसन्न होता है। मानव शरीर की दुर्बलता, चाहे वो मानसिक हो या शारीरिक दोनों रूपों में संगीत आरोग्य औषधि माना गया है।

संगीत मानव के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करता है। जहाँ बच्चे के जन्म लेते ही मन प्रफुल्लित होकर आनन्दमय हो जाता है वही मानसिक रूप से भी मानव समाज में अपने आपको पूर्ण होने का गौरव की प्राप्ति करता है। परिवार

के किसी भी आनन्दमय क्षण में संगीत से शुभारम्भ मानसिक सन्तुष्टि प्रदान करता है जहाँ मानव का ह्रदय आनन्दमय भाव को महसूस करता है, वहीं मस्तिष्क अच्छे–बुरे का बोध कराता है। सकारात्मक तरंगे स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन दोनों के लिए अनिवार्य है।

कवि संगीतज्ञ रवीन्द्रनाथ जी के विचारों में संगीत को आपने आध्यात्मिक अनुभूति का साधन माना है आपके कथनानुसार ''संगीत द्वारा ही मुझे यह बोध होता है कि मुक्ति हमारी है। मै उस (मुक्ति) की अनुभूति कर सकता हूँ।''

उन्होने अनुभव किया है ''कि गान के स्वर में मुक्ति ऊपर–ऊपर उड़ती है क्योकि इसके माध्यम से मै देह–मन में बहुत दूर अपनत्व (अपने) को भूल जाता हूँ मेरे अनजाने, सहज ही गान मुझे लौकिक बन्धनों से मुक्त कर, मेरा हरण कर ले जाता है। गान के माध्यम से जब–जब समस्त विश्व को देखता, तब–तब तुमको चिन्हता हूँ जानता हूँ।''

इस प्रकार रवीन्द्रनाथ जी संगीत को तीव्रतम चेतना के माध्यम से अलौकिक सत्य की अनुभूति करते है जिसमें सभी को पुकित का बोध कराते है उनके लिए संगीत उच्च कोटि की दशा में पहुँचाने वाली कला है।

रवीन्द्रनाथ जी सत्य का बोध गान के सहारे करते है और इस बोध का विश्लेषण उनकी अनुभूति के अनुसार इस प्रकार है– ''गान के सुर के प्रकाश में इतने दिनों बाद सत्य की अनुभूति की। सुर का वाहन सत्य लोक में हमे ले जाता है वहाँ पैर से नहीं जाया जा सकता वहाँ जाने का मार्ग किसी ने आँखों से देखा नहीं।''

मानव जीवन का स्वस्थ्य आत्मोपलविज में माना गया है। उपनिषत्कारों ने आत्मा का परिचय प्राप्त करते हुए पंच कोशो का अवलम्बन किया है अन्नमय, प्राणमय, मनोमय, विज्ञानमय तथा आनन्दमय कोश।

प्रथम दो जीव जन्तुओं में सामान्यतः उपलब्ध होते है। तथा शेष तीन मानव जाति को सहज विभूति है। इन सब में आनन्दमय कोश का महत्व सर्वाधिक माना गया है। परम तत्व का साक्षात्कार इसी कोश का कार्य है। इसी सारभूत तत्व को पाकर जीव रस प्लावित हो जाता है। इससे प्राप्त होने वाला आनन्द मानव, मनुष्य गन्धर्व, देव, गन्धर्व तथा प्रजापति के आनन्द से बढ़कर सर्वव्यापी और श्रेष्ठतम है तैत्रिरीय उपनिषद के अनुसार यही परमानन्द की मीमांसा है।

''रसौ वै सः।
रसं ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवित।''

संगीत इसी आत्मानन्द का माध्यम है। संगीत का मधुर कलरव जब कर्णकुहरों में पड़ता है, तब अन्तर्चेतना प्रबुद्ध हो जाती है और वह ऐसे अलौकिक आनन्द एवं दिव्यानुभूति का अनुभव करता है जो साधारण इन्द्रियजन्य आनन्द से शतगुण अधिक है।

मन मस्तिष्क दोनो के अवयवों सार रूप संगीत व भावों को पुष्ठ करता है। जिससे मानव जीवन में एक स्फूर्ति सकारात्मक विचार व तरगों का संचार प्रवाहित होता रहता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. परांजये डॉ0 शरच्चन्द्र, (1992), संगीत बोध मध्य प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी भोपाल।
2. कुमार डॉ0 कृष्ण (1977), भारतीय संस्कृति के आधार तत्व, प्रकाश बुक डिपो बरेली।
3. वीर रामअवतार (1996), भारतीय संगीत का इतिहास, राधा पब्लिकेशन नई दिल्ली–110002।
4. चौबे डॉ0 सुशील कुमार (1975) हमारा आधुनिक संगीत, विनोद चन्द पाण्डेय निदेशक उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ।